'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 अंक 21 19 जनवरी 2018 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

संघ के शीतकालीन मा.प्र.शि. संपन्न

शीतकाल में प्रतिकूल मौसम के चलते विद्यालयों में अवकाश होता है लेकिन साधना के लिए प्रतिकूल मौसम सहायक बन सकता है इसीलिए अवकाश के इस अवसर का मौसम की प्रतिकूलता की परवाह किए बिना उपयोग करते हुए संघ के प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते है। इस समय तक अधिकांश प्रा.प्र.शि. संपन्न हो चुके हैं और इन दिनों में उच्चतर प्रशिक्षण के लिए माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'मात्र अभिवादन नहीं हैं जय संघ शक्ति'

रोजदा शिविर के दौरान 5 जनवरी को स्नेहमिलन रखा गया जिसमें स्थानीय ग्रामवासी एवं राजपूत सभा जयपुर से जुड़े लोग शामिल हुए। स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए माननीय महावीरसिंह सरवड़ी ने कहा कि जय संघ शक्ति मात्र अभिवादन नहीं है। इसका अर्थ है संघ की शक्ति की जय। संगठन के अभाव में जय संभव नहीं है लेकिन संगठन होता क्या है यह समझने एवं फिर तद्नुसार अभ्यास करवाने का काम श्री क्षत्रिय युवक संघ करता है। श्रेष्ठ संगठन किसी घटना विशेष पर तात्कालिक रूप से एक होना नहीं होता बल्कि एक लक्ष्य, एक मार्ग, एक नेता एवं एक ध्वज के प्रति निरन्तर अभ्यास द्वारा सर्वात्मना समर्पण होता है। इसके अभाव में संगठन बिखर जाया करता है और सभी अपनी अपनी राह चलने लगते हैं। ऐसा अभी हाल ही की घटनाओं से स्पष्ट है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

जागृति के जनक की जयंती

महाभारत के युद्ध के बाद धर्मराज युधिष्ठर का साम्राज्य स्थापित हुआ। अधर्म की समर्थक असंख्य ताकतों के विनाश के पश्चात् व्यवस्था पनपी एवं भगवान के अवतार का हेतु पूर्ण होकर धर्म की स्थापना हुई लेकिन प्रकृति के सहज द्वद्वात्मक स्वभाव की परिणति स्वरूप अधर्म पुनः सिर उठाने लगा और धर्म का साम्राज्य क्रमिक रूप से ह्रास को प्राप्त होने लगा। समाज में व्यवस्था स्थापित करने वाली क्षात्रवृत्ति अपने स्वाभाविक गुणों से च्युत होने लगी और इसी के परिणाम स्वरूप देव भूमि भारत 800 वर्ष पूर्व तमोगुणी आक्रांताओं का गुलाम हो गया। इस गुलामी ने भी नानविध विकृतियों को जन्म दिया और उन विकृतियों के आक्रमण से हत हो समाज को व्यवस्था देने वाली क्षात्रवृत्ति अपने स्वभाव को विस्मृत कर तमोगुणी निद्रा के आगोश में अपनी उपयोगिता खो बैठी। समाज में मूढ़ता, हताशा, स्वार्थ, अहंकार आदि दुर्गणों का साम्राज्य स्थापित हो गया। इसी तमोगुणी निद्रा के विरुद्ध संघर्ष का सूत्रपात हुआ 22 दिसम्बर 1946 को श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में और इस जागृति का शंख फूंकने वाले 22 वर्षीय युवक थे पूज्य तनसिंह जी। उन्हीं जागृति के जनक की जयंती आगामी 25 जनवरी को कृतज्ञ समाज विभिन्न स्थानों पर समारोहपूर्वक मनाएगा।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

युवा मार्गदर्शन कार्यशाला संपन्न

संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ के तत्वावधान में 7 जनवरी को जालोर जिला मुख्यालय स्थित वीरमदेव राजपूत छात्रावास में 18 से 35 वर्ष तक के युवाओं के मार्गदर्शन के लिए कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी महेन्द्रप्रताप सिंह गिराब, सामाजिक व राजनीतिक कार्यकर्ता एवं सूचना का अधिकार कानून के विशेषज्ञ यशवर्धनसिंह झेरली, जालोर के उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्रसिंह जालेली एवं नवचयनित आरपीएस जेठूसिंह कुसीप ने युवाओं का मार्गदर्शन किया। राजेन्द्रसिंह जालेली ने जालोर के संदर्भ में सामाजिक एवं शैक्षणिक स्थिति पर अपनी बात कही एवं विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से प्रोत्साहन दिया। आरपीएस जेठूसिंह ने अपने स्वयं के संघर्ष की कहानी बताते हुए कहा कि व्यक्ति चाहे तो हर प्रकार की परिस्थिति से संघर्ष कर आगे बढ़ सकता है। **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

सरकार ने समझौता तोड़ा समाज में आक्रोश

सांवराद प्रकरण में सर्व समाज की संघर्ष समिति एवं सरकार के प्रतिनिधि मंडल के बीच 18 जुलाई को हुए समझौते के अनुसार एफआईआर संख्या 190/2017 पुलिस थाना रतनगढ़ (आनंदपाल एनकाउंटर संबंधी) व 238/2017 पुलिस थाना अशोक नगर (सुरेन्द्रसिंह की हत्या संबंधी) के मामले सीबीआई जांच के लिए भेजे जाने थे। आंदोलन के दौरान समाज के प्रतिनिधियों पर दर्ज मुकदमें प्रारंभिक जांच के बाद वापिस लिए जाने की सहमति भी इस समझौते में बनी थी। लेकिन संघर्ष समिति के नेताओं द्वारा सरकार को बार-बार स्मरण दिलाने के बावजूद उक्त मुकदमें बंद नहीं किए गए बल्कि 29 दिसम्बर 2017 को भारत सरकार द्वारा जारी नोटिफिकेशन के अनुसार समझौते में तय किए गए मुकदमों के साथ संघर्ष समिति के नेताओं पर आंदोलन को लेकर दर्ज किए गए मुकदमें भी सीबीआई को सौंप दिए हैं। साथ ही सांवराद प्रकरण के सभी मुकदमें सीबीआई को सौंप दिए गए। यह सरकार द्वारा किए गए समझौते से पीछे हटना ही नहीं बल्कि संघर्ष समिति द्वारा सरकार पर किए गए विश्वास को तोड़ना है। सरकार द्वारा की गई विश्वास तोड़ने की इस कार्यवाही को लेकर समाज में आक्रोश व्याप्त है। इसे लेकर 8 जनवरी को राजपूत सभा जयपुर में बैठक कर प्रेस वार्ता की गई जिसमें सर्व समाज के संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए। प्रेस वार्ता में इस मुद्दे के साथ-साथ आगामी 25 जनवरी को सर्व समाज के राष्ट्र व्यापी विरोध के बावजूद रिलीज हो रही फिल्म पद्मावत को लेकर भी आक्रोश जताया गया एवं सरकार द्वारा गठित सेंसर बोर्ड की शह पर इतिहास व संस्कृति के साथ व्यवसायिक हितों के कारण हो रहे खिलवाड़ को रोकने की मांग की गई। साथ ही राजपूत सभा जयपुर पर अवैधानिक रूप से लगाए गए सेवाकर को लेकर भी विरोध जताया गया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

युवा मार्ग.... किस प्रकार बारहवीं के पश्चात् पढ़ाई छोड़कर मुंबई जाने के बावजूद उन्होंने संघर्ष नहीं छोड़ा और वापिस लौटकर विभिन्न परीक्षाएं पास करते हुए सफलताएं प्राप्त की इसका पूरा विवरण प्रस्तुत किया। यशवर्धनसिंह ने बताया कि अन्याय का प्रतिकार करने की प्रवृत्ति हमारे खून में है लेकिन प्रतिकार करने के साधन समय के अनुसार बदलते रहते हैं। यदि जमाने के साधनों का उपयोग नहीं किया जाए तो प्रतिकार प्रभावी नहीं हो पाता। उन्होंने वर्तमान व्यवस्था को स्वीकार कर इसी व्यवस्था में उपलब्ध साधनों का उपयोग करने की आवश्यकता जताई एवं इसके लिए सूचना के अधिकार कानून को महत्त्वपूर्ण साधन बताया। उन्होंने कहा कि हमारे गांव शहर में उपलब्ध संसाधन हमारे पुरखों द्वारा संरक्षित रहे हैं, हमें भी आज उनको अपना मानकर उनका संरक्षण करना चाहिए एवं संविधान प्रदत्त अधिकारों का उपयोग करते हुए समस्त समाज के प्रति क्षत्रिय के रूप में अपने दायित्व का निर्वहन करना चाहिए। महेन्द्र प्रताप सिंह ने बताया कि बड़े से बड़े पद पर भी हमारे ही जैसे लोग पहुंचते हैं, यहां आपके सामने मार्गदर्शन देने आए लोग आप जैसे ही सामान्य युवा रहे हैं, जब ये यहां पहुंच सकते हैं तो आप क्यों नहीं? इसलिए अपने आत्म विश्वास को जागृत कर लक्ष्य बनाकर प्रयास करना चाहिए। उन्होंने अपने साथियों के विभिन्न प्रकार के उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार बार-बार असफल होने वाले लोगों ने निरन्तर प्रयास जारी रखा और वे आज अच्छे पदों पर समाज की सेवा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आगे बढ़ने वाले के समक्ष किसी प्रकार की परिस्थिति बाधक नहीं बनती, आगे बढ़ने वाले लोग अपनी प्रतिकूलताओं को अपना साधन बना लेते हैं और अपने लक्ष्य हासिल करते हैं। भोजनोपरांत द्वितीय सत्र में संवाद का कार्यक्रम रखा गया जिसमें उपस्थित संभागियों ने प्रथम सत्र में वक्ताओं द्वारा बताई गई बातों से संबंधित प्रश्न पूछे। चारों ही वक्ताओं ने विभिन्न प्रश्नों का अपने अपने अनुभव के आधार पर उत्तर दिया एवं संभागियों की शंकाओं का समाधान किया। इस चर्चा में उभर कर आया कि जो जिस स्तर की कक्षा में पढ़ रहा है उसे उसी स्तर का संपूर्ण पाठ्यक्रम दत्तचित्त होकर पढ़ना चाहिए। आगे होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में किस विषय को कितना पढ़ना चाहिए, किस प्रकार पढ़ना चाहिए यह बात भी समझाई गई। उल्लेखनीय है कि इस कार्यशाला में शामिल अधिकांश युवा 18 से 25 वर्ष की वय के थे इसलिए उन्हें यह बताया गया कि यह उम्र जीवन को दिशा देने वाली उम्र है। यदि इस उम्र में भावी जीवन की तैयारी गंभीरतापूर्वक की जाए तो शेष जीवन को उपयोगी बनाया जा सकता है लेकिन यदि इसी उम्र में अखबारों में छपने की, आंदोलन करने की लत लग गई तो भावी जीवन की सार्थकता पर प्रश्न खड़ा होता है इसलिए अपराधी तत्वों से बचते हुए जीवन को सही दिशा देने की आवश्यकता पर बल दिया गया। बाड़मेर से प्रकोष्ठ के प्रतिनिधि के रूप में आए प्रेमसिंह लुणु ने बाड़मेर में रीट व कांस्टेबल परीक्षा के लिए चल रही टेस्ट श्रृंखला के बारे में पूरी जानकारी दी एवं जालोर में इस प्रकार का प्रयास प्रारम्भ करने पर पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के अंत में कर्मचारी प्रकोष्ठ के केन्द्रीय समन्वयक कृष्णसिंह राणीगांव ने प्रकोष्ठ की तरफ से सभी का आभार प्रकट किया।

सरकार ने...

इस प्रकार विगत लंबे समय से भाजपा सरकार एवं समाज के बीच लगातार अविश्वास का वातावरण बनता जा रहा है एवं सरकार के स्तर पर इस अविश्वास को समाप्त करने की अपेक्षा भड़काऊ कार्रवाई की जा रही है। यह भाजपा के लिए तो निश्चित रूप नुकसानदायक होगा ही लेकिन समाज के लिए भी नुकसानदायक है। बार-बार समाज स्वयं को पीड़ित महसूस कर रहा है और ऐसे में पनपी निराशा व हताशा समाज के युवाओं को विरोध के अलोकतांत्रिक तरीके अपनाने को प्रेरित करती है। किसी भी समाज या राष्ट्र में युवा पीढ़ी का हताशा व निराशा के कारण विद्रोही होना विध्वंशक परिणाम लाता है जो समाज, राष्ट्र एवं सरकार सभी के लिए घातक होते हैं।

उदयपुर में युवा कार्यशाला

7 जनवरी को ही उदयपुर संभाग मुख्यालय पर भूपाल नोबल्स संस्थान में इसी प्रकार की कार्यशाला रखी गई जिसमें नव चयनित प्रशासनिक अधिकारियों ने युवाओं को सफलता के टिप्स बताए एवं अधिकाधिक लोगों से प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी के लिए आह्वान किया।

चैनसिंह राठौड़ तीसरी बार अध्यक्ष बने

राजस्थान पेंशनर्स मंच जयपुर की बैठक पटेल नगर झोटवाड़ा जयपुर में आयोजित हुई जिसमें चैनसिंह राठौड़ (बरवाली) को तीसरी बार अध्यक्ष चुना गया। इस अवसर पर पेंशनर्स की समस्याओं पर मंथन किया गया और 30 पेंशनर्स को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त कृषि निदेशक नारायणसिंह राठौड़ थे।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

मेयो कॉलेज

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

भारत का इटन (ETON - इंग्लैण्ड का सर्वश्रेष्ठ पब्लिक स्कूल) कहे जाने वाले मेयो कॉलेज अजमेर की स्थापना भारत के तत्कालीन वायसराय व गर्वनर जनरल लार्ड मेयो ने 1871 में की थी। शिक्षण संस्था के रूप में इसने अपनी शुरुआत 1875 में की। 300 एकड़ में फैली इस संस्था का प्रारुप वास्तुकार मेजर मॉण्ट ने तैयार किया। संस्था भवन को बनने में आठ वर्ष लगे। हिन्दू, मुगल व ईरानी वास्तुकला के मिश्रण से सफेद संगमरमर से बनी इसकी इमारत एक स्वप्न महल लगती है। ऊंची मीनारों व छतरीयों से सज्जित यह भवन ताजमहल की याद दिलाता है। भवन के अन्दर चित्रकला एवं तैल चित्र भारतीय संस्कृति का एक अध्याय है। राजपूताना प्रान्त के महाराजाओं एवं जागीरदारों के पुत्रों को सर्वश्रेष्ठ शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मेयो कॉलेज संस्था का निर्माण किया गया। जिसमें विनम्र अभिजात्य वर्ग में मानवीय व्यक्तित्व की जीवन्तता को पूर्ण रूप से तरासा जा सके एवं वे योग्य शासक बनकर प्रजा पर अच्छा शासन कर सकें। 1875 में प्रारम्भ में मेयो कॉलेज के प्रथम छात्र के रूप में अलवर के राजकुमार मंगलसिंह नरुका को प्रवेश दिया गया, मेयो भवन के बाहर बना भव्य अलवर गेट इसकी स्मृति दिलाता है। प्रारम्भ से लेकर भारत की आजादी तक यहां के प्राचार्य लगभग विदेशी ही रहे। तत्कालीन समय के लगभग सभी वायसराय एवं गवर्नर जनरल ने इस संस्था का अवलोकन किया। इंगलैण्ड के सम्राट किंग एडवर्ड सप्तम, क्वीन मेरी, किंग एडवर्ड अष्टम मेयो कॉलेज की गतिविधियों व शिक्षा पद्धति के अवलोकन हेतु यहां आए। विश्व की अनेक हस्तियां इस संस्था की प्रसिद्धि सुन यहां आती रही हैं।

विश्व के ख्यातनाम प्रध्यापकों एवं प्राचार्यो ने यहां शिक्षा दी है। यहां प्रत्येक राजघराने के अपने महलनुमा छात्रावास भवन बने हुए हैं जिसमें छात्र अपने ट्यूटर, वार्डन, नौकरों की फौज एवं अनिवार्य रूप से घोड़ों के साथ रहता था। जहां पश्चिम की उन्नत शिक्षा के साथ-साथ घुड़सवारी, तलवार बाजी जैसी पारंपरिक तकनीक व नवीन अस्त्रों से निशानेबाजी का अभ्यास भी समग्र पाठ्यक्रम का हिस्सा था। समाज जीवन के हरेक पहलू में छात्र के आत्म विश्वास को परिपूर्ण करने हेतु हर क्रियाकलाप पर तीक्ष्ण नजर रखी जाती थी। चाहे वह खाने की टेबल हो या खेल का मैदान जिसकी नैसर्गिक परिपक्वता की झलक छात्रों में स्पष्ट दिखाई देती थी। मेयो कॉलेज के मुख्य सुन्दर भवन के पास महाराजाओं ने राजपूत शैली से अपनी रियासत के नाम से भव्य छात्रावास भवन बनवाए। बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, कोटा, उदयपुर, अलवर, टोंक, भरतपुर, झालावाड़ हाऊस बनाए गए। किशनगढ़ के महाराजा ने सुन्दर शिव मंदिर बनाया, जिंद-नाभा (पंजाब) के राजा ने प्रयोग शालाएं बनवाई। कश्मीर भवन भी बना। बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने भव्य बीकानेर पैवेलियन एवं ग्राउण्ड बनाया। बाद में काल्विन हाऊस, अजमेर हाउस, पृथ्वीराज हाऊस और ओमान के शेख ने ओमान हाउस बनवाया। 1942 में मेयो के द्वार सभी के लिए खोल दिए गए और यह पब्लिक स्कूल बन गया। अब यहां कोई भी अध्ययन कर सकता है। परन्तु इसका मैनेजमेंट राजपूत राजाओं एवं जागीरदारों के पास ही है। आजादी के बाद भारत के समस्त राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपराष्ट्रपति यहां के वार्षिक समारोह में आते रहे हैं। यहां के पढ़े छात्रों ने राजनीति, शिक्षा, खेल, राजनयिक, प्रशासनिक व सेना सेवाओं, उद्योग आदि में विश्व में नाम कमाया है। यहां के पूर्व छात्र ओमान के सुल्तान सैयद तैमुर एवं नेपाल के महाराजा विरेन्द्रशाह भी यहां के वार्षिक समारोह में मुख्य अतिथि रहे हैं। 1976 में मेयो ने भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के मुख्य आतिथ्य में अपनी स्थापना की शताब्दी मनाई। मेयो कॉलेज के पास वर्तमान में हॉकी एवं फुटबाल तथा पोलो के 15 बडे खेल मैदान, 40 टेनिस कोर्ट, 2 स्वीमिंग पूल, जिम, पांच स्क्वेश कोर्ट, 3 बॉस्केटबाल कोर्ट एवं गोल्फ कोर्स है।

शाही अवधारणा पर उस समय देश में एचिसन कॉलेज लाहौर, राजकुमार कॉलेज रायपुर (छत्तीसगढ़), राजकुमार कॉलेज राजकोट (गुजरात) एवं डेली कॉलेज इंदौर भी खोले गए थे। परन्तु मेयो अपने प्रारम्भ से ही सिंध, पंजाब, कश्मीर, त्रिपुरा, मणिपुर एवं दक्षिण भारत के राजकुमारों एवं अन्य छात्रों का ड्रीम (स्वपन) रहा है और वे अपने को 'मेयोइट' होने पर गौरवान्वित महसूस करते हैं। यहां के छात्र एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत विदेशों में शिक्षा हेतु आदान-प्रदान में जाते रहते हैं। मेयो कॉलेज शुरू से ही एक स्कूल रहा है। कॉलेज शिक्षा यहां कभी भी प्रदान नहीं की गई। यहां एक सीनियर सैकण्डरी स्कूल ही है जो सीबीएससी से एफिलेटेड है। प्रारम्भ में यह इंग्लैण्ड की शिक्षा संस्थानों से जुड़ा रहा था।

प्रतीक का संदेश : मेयो कॉलेज का वाक्य 'लेट देयर बी लाइट' (प्रकाश हो) है और प्रतीक चिह्न में खांडे (दोधारी तलवार) पर सरस्वती का वाहन नाचता मोर है। 'कॉलेज कॉट ऑफ आर्म्स' में एक ओर राजपूत और दूसरी ओर एक भील योद्धा खड़ा है। भीतरी भाग में बने दुर्ग के एक ओर सूर्य एवं दूसरी ओर चन्द्रमा है जो सूर्य एवं चन्द्रवंशी राज कुलों का द्योतक है। कॉलेज के ध्वज में राजपूतों के पांच पवित्र रंगों (लाल, सुनहरी नीला, सफेद तथा हरा) को क्रमशः दर्शाया गया है। मेयो कॉलेज (स्कूल) पूर्ण रूप से बालक आवासीय विद्यालय है। बालिकाओं के लिए मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल (आवासीय) है तथा सह शिक्षा के लिए मयूर स्कूल है। इन तीनों विद्यालयों को मेयो कॉलेज गवर्निंग कमेटी चलाती है। वर्तमान में इसके अध्यक्ष कोटा महाराव बृजराजसिंह हैं।

श्री क्षत्रिय युवक संघ, उत्तरदायित्व विभाजन

माननीय संघप्रमुख श्री के निर्देशानुसार 22 दिसम्बर 2017 से प्रारंभ हुई संघ के 72वें सत्र के लिए निम्नानुसार उत्तरदायित्व विभाजन किया गया है-

संचालन प्रमुख	लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास	98281-30001
केन्द्रीय कार्यकारी		
श्री गजेन्द्रसिंह आउ	99826-11005	
श्री प्रेमसिंह रणधा	94147-01479	
श्री रेवन्तसिंह पाटोदा	86969-36935	
श्री विक्रमसिंह इन्द्रोई	80034-44444	
श्री महेन्द्र सिंह पांची	98255-84755	
श्री रामसिंह माडपुरा	94131-84223	
श्री प्रकाश सिंह भुरटिया	94132-92623	

केन्द्रीय कार्यालय एवं प्रभारी

समन्वय, संस्थाएं, राजनीति व सरकारी विभाग	श्री महावीरसिंह सरवड़ी	98281-05994
शिविर कार्यालय	श्री राजेन्द्रसिंह बोबासर	99838-44403
शाखा कार्यालय	श्री महेन्द्रसिंह गुजरावास (राजस्थान)	94130-59211
	श्री छनुभा पच्छेगांव (गुजरात)	98244-52947
संस्थान कार्यालय	श्री शंकरसिंह महरोली	94607-75557
संयोमा	श्री कृष्णसिंह राणीगांव	94144-20009
संघशक्ति-पथप्रेरक सदस्यता	श्री खीवसिंह सुल्ताना	94601-00194
लेखा	श्री गंगासिंह साजियाली	94143-96375
समाचार पत्र	श्री रेवन्तसिंह पाटोदा	86969-36935
महिला प्रकोष्ठ	श्री जोरावरसिंह भादला (राजस्थान)	99824-08873
	श्री अजीतसिंह धोलेरा (गुजरात)	98980-22951
वेबसाइट व सोशल मीडिया	श्री अभयसिंह रोड़ला	70428-79890
	श्री हर्षवर्धन सिंह रेडा	97821-04682

संभाग प्रमुख एवं प्रान्त प्रमुख

	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री गजेन्द्रसिंह आऊ**	
संभाग प्रमुख	**श्री विक्रमसिंह सिंघाणा**		76650-19192
प्रांत	जयपुर शहर	श्री सुधीरसिंह ठाकरियावास	98281-30002
	जयपुर ग्रामीण (उत्तर पूर्व)	श्री देवेन्द्रसिंह बड़वाली	92143-10288
	जयपुर ग्रामीण (दक्षिण पश्चिम)	श्री रामसिंह अकदड़ा	94615-85348
	दौसा (भरतपुर, धौलपुर)	श्री मदनसिंह बामण्या	94147-88158
	अलवर	श्री गजराज सिंह पीपली	94134-45559
संभाग प्रमुख	**श्री गौरीशंकर दीपपुरा**		97832-95244
प्रांत	शेखावाटी	श्री जुगराजसिंह जुलियासर	98288-34449
संभाग प्रमुख	**श्री शिम्भुसिंह आसरवा**		99821-36763
प्रांत	नागौर	श्री उगमसिंह आशापुरा	99503-52565
	कुचामन	श्री नत्थुसिंह छापड़ा	97720-97087
	लाडनूं, सुजानगढ़	श्री विक्रमसिंह ढींगसरी	96728-77549
संभाग प्रमुख	**श्री गुलाबसिंह आशापुरा**		99823-10968
प्रान्त	बीकानेर शहर	श्री रेंवतसिंह जाखासर	94130-13884
	नोखा-कोलायत	श्री करणीसिंह भेलू	99285-14502
	डूंगरगढ़	श्री भागीरथसिंह सेरुणा	80032-93524
	चूरू	श्री राजेन्द्रसिंह आलसर	94145-82311
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री प्रकाशसिंह भुरटिया**	
संभाग प्रमुख	श्री देवीसिंह माडपुरा		70233-01275
प्रांत	बाड़मेर शहर	श्री महीपालसिंह चूली	94132-92849
	शिव	श्री राजेन्द्रसिंह भियाड़-2	94146-55723
	गडरा	श्री समुद्रसिंह हरसाणी	98280-29799
	चौहटन	श्री उदयसिंह देदूसर	99285-04141
	बायतु	श्री मूलसिंह चांदेसरा	94149-00405
	गुडामालानी	श्री गणपतसिंह बूठ	90575-98339
संभाग प्रमुख	**श्री मूलसिंह काठाड़ी**		94146-33980
	बालोतरा	श्री राणसिंह टापरा	94143-84408
	सिवाना	श्री भैरूसिंह पादरू	94141-89665

	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री रामसिंह माडपुरा**	
संभाग प्रमुख	**श्री गोपालसिंह रणधा**	-	77424-99083
प्रान्त	जैसलमेर शहर	श्री नरेन्द्रसिंह तेजमालता	94146-56448
	चांधन	श्री तारेन्द्रसिंह झिंझनियाली	99289-74111
	म्याजलार-झिंझनियाली	श्री हरीसिंह बेरसियाला	75686-81821
	रामगढ़-मोहनगढ़	श्री पदमसिंह रामगढ़	90010-71485
संभाग प्रमुख	**श्री सांवलसिंह सनावड़ा**		97844-71764
प्रान्त	पोकरण	श्री अमरसिंह रामदेवरा	70735-08070
	फलोदी-नाचना	श्री गणपतसिंह अवाय	94141-49797
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री प्रेमसिंह रणधा**	
संभाग प्रमुख	**श्री महेन्द्रसिंह गुजरावास**		94130-59211
प्रान्त	जोधपुर शहर	श्री उम्मेदसिंह सेतरावा	93529-05379
	शेरगढ़-बालेसर	श्री चन्द्रवीरसिंह भाळू	99501-88901
	ओसियां-बापिणी	श्री प्रेमसिंह पांचला	90019-33354
	भोपालगढ़-बिलाड़ा,	श्री भरतपालसिंह दासपां	94145-60797
संभाग प्रमुख	**श्री अर्जुनसिंह देलदरी**	-	98284-56333
प्रान्त	पाली	श्री महोब्बतसिंह धींगाणा	97725-89809
	गोड़वाड़	श्री हीरसिंह लोड़ता	98291-12991
	आहोर-जालोर	श्री गणपतसिंह भंवराणी	98281-36005
	सायला-भीनमाल,	श्री नाहरसिंह जाखड़ी	94145-65289
	सांचौर-रानीवाड़ा	श्री शक्तिसिंह आशापुरा	98290-52037
	सिरोही	श्री सुमेरसिंह उथमण	94602-62224
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री विक्रमसिंह इन्द्रोई**	
संभाग प्रमुख	**श्री भंवरसिंह बेमला**	-	94138-13601
प्रान्त	उदयपुर शहर	श्री सुरेन्द्रसिंह रोलसाहबसर	85600-23447
	उदयपुर ग्रामीण	श्री भगतसिंह बेमला	97845-40771
	राजसमन्द	श्री फतेहसिंह भटवाड़ा	99280-46575
	वागड़	श्री हनवन्तसिंह एसएसगडा	99835-65520
संभाग प्रमुख	**श्री गंगासिंह साजियाली**	-	94143-96375
प्रान्त	अजमेर शहर	श्री शिवदयाल सिंह खुड़ी	94140-05449
	अजमेर ग्रामीण	श्री विजयराजसिंह जालिया	96022-46116
	भीलवाड़ा	श्री बृजराजसिंह खारड़ा	94142-11465
	चित्तौड़गढ़	श्री जीवनसिंह नरधारी	94139-78303
	मालवा	श्री गोपालशरण सिंह सहाड़ा	94136-41017
	केन्द्रीय कार्यकारी	**महेन्द्रसिंह पांची**	
संभाग प्रमुख	श्री धर्मेन्द्रसिंह आमली		99249-94465
प्रान्त	भाव नगर शहर	श्री भागीरथसिंह सांडखाखरा	94285-22316
	धन्धुका	श्री जयपालसिंह धोलेरा	93289-55455
	मोरचन्द	श्री अर्जुनसिंह मोरचंद	89807-08137
	नारी क्षेत्र	श्री मंगलसिंह धोलेरा	94265-47936
	झालावाड़	श्री भूरूभा मोढवाणा	99253-00400
	कच्छ	श्री तनसिंह बिजावा	94280-83117
संभाग प्रमुख	**श्री दीवानसिंह काणेटी**		96383-58777
प्रान्त	अहमदाबाद-गांधीनगर	श्री जगतसिंह वलासना	99987-38410
	अहमदाबाद ग्रामीण	श्री दीवानसिंह काणेटी	96383-58777
	मेहसाणा	श्री विक्रमसिंह कमाणा	94292-23910
	बनासकांठा	श्री डूंगरसिंह चारड़ा	97275-51651
	साबरकांठा	श्री प्रतापसिंह भवानगढ़	94298-36882
	अन्य प्रदेश		
संभाग प्रमुख	**श्री अजीतसिंह धोलेरा**		98980-22951
	श्री दयालसिंह किशोरपुरा	(सहयोगी)	98285-74503
प्रान्त	मुम्बई	श्री नीरसिंह सिंघाना	92233-41965
	पुणे	श्री रणजीतसिंह चौक	99232-30825
	सूरत	श्री खेतसिंह चान्देसरा	99744-93721
	शेष दक्षिण भारत	श्री पवनसिंह बिखरण्या	98811-32045
संभाग प्रमुख	**श्री दीपसिंह बैण्यांकाबास**		99830-78181
	श्री जितेन्द्रसिंह देवली	(सहयोगी)	98291-11386
प्रान्त	उत्तरप्रदेश	श्री जितेन्द्रसिंह सिसरवादा	77260-00111
	दिल्ली	श्री रेवतसिंह धीरा	96502-50458
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री रेवंतसिंह पाटोदा**	
विभिन्न प्रकोष्ठ	कर्मचारी प्रकोष्ठ	श्री कृष्णासिंह राणीगांव	94144-20009
	व्यवसायी प्रकोष्ठ	श्री पवनसिंह बिखरण्या	98811-32045
	अधिवक्ता प्रकोष्ठ	श्री दिलीपसिंह माधोकाबास	94147-17607
	गौरव सैनानी प्रकोष्ठ	केन्द्र द्वारा संचालित	

राजनीति का धर्म या धर्म की राजनीति

संपादकीय

शीर्षक में दो बार धर्म शब्द का उपयोग किया गया है और दोनों ही जगह उसका अर्थ अलग-अलग है। पहली बार प्रयुक्त हुए धर्म शब्द का अर्थ है कि राजनीति अपनी सार्थकता को सिद्ध करे। वह सृष्टि के कल्याण के साधन के रूप में अपनी भूमिका को भली प्रकार निभाए उसके लिए उसे कुछ नियमों, परम्पराओं एवं नैतिक मापदण्डों का बंधन स्वीकार करना चाहिए जो उसका धर्म माना जाएगा। धर्म का अर्थ धारण करने वाला होता है अर्थात वे सभी आचरण जिनको पालन करने पर संसार में सार्थकता सिद्ध होती है वे सभी धर्म कहलाते हैं और इस अर्थ में राजनीति का भी धर्म होना आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं होता है तो राजनीति सृष्टि के कल्याण का साधन बनने की अपेक्षा स्वयं साध्य बन जाती है और आज ऐसा ही हो रहा है। राजनीति स्वयं साध्य बन गई है इसलिए उसका स्वयं का कोई धर्म नहीं रहा, कोई कानून कायदा या नैतिकता नहीं रही बल्कि येनकेन प्रकारेण सत्ता पर कब्जा करने और फिर उसे बनाए रखना ही उसका धर्म बन गया है जो वास्तव में धर्म नहीं बल्कि अधर्म है। और अधर्म है इसीलिए विपक्ष विहीन लोकतंत्र की गर्वोक्ति की जा रही है। बस केवल और केवल विजय ही उद्देश्य रह गया है और एक गलत व अनैतिक अवधारणा को प्रचारित किया जा रहा है कि इतिहास विजेताओं का ही बनता है, विजय कैसे हासिल की यह महत्त्वपूर्ण नहीं है। यदि यही अवधारणा सही है तो फिर हमारा आदर्श भारतीय तो नहीं हो सकता क्योंकि केवल विजय और सत्ता हासिल करने के लिए भारत ने कभी राजनीति नहीं की बल्कि भारतीयता को रौंदने का प्रयास करने वाले विदेशी आक्रांताओं का तरीका सदैव यही रहा है।

शीर्षक में दूसरी बार जिस अर्थ में धर्म शब्द का प्रयोग हुआ है वह केवल और केवल किसी विशिष्ट उपासना पद्धति तक ही संकुचित है और ऐसी राजनीति त्याज्य ही मानी जानी चाहिए जो किसी विशिष्ट पूजा पद्धति के लिए की जाए क्योंकि यह भी कभी भारत का आदर्श नहीं रहा। भारतीय राजनीति तो सदा से ही व्यक्ति को अपनी पूजा पद्धति चुनने का अवसर देती थी और अवसर ही नहीं देती थी बल्कि उसके उस अवसर को संरक्षण भी प्रदान करती थी। इसीलिए इस महान देश में विभिन्न प्रकार के दर्शन एवं पूजा पद्धतियां पल्लवित एवं पुष्पित हुईं। भारतीय राजनीति तो इस प्रकार की स्वतंत्रता को संरक्षण ही नहीं देती थी बल्कि बढ़ावा भी देती थी। लगभग सभी भारतीय राजाओं के राज्य में सभी प्रकार की पूजा पद्धतियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था एवं आवश्यक संरक्षण व संवर्धन किया जाता था। हां भारत में आक्रांता बनकर आई क्रूर एवं जंगली जातियों ने जरूर सत्ता को पूजा पद्धतियों से जोड़कर किसी विशेष पूजा पद्धति का संरक्षण एवं संवर्धन किया एवं शेष का दमन करने के लिए सत्ता का भरपूर उपयोग किया लेकिन यह भारत का आदर्श कभी नहीं रहा। आजादी के बाद पनपी व्यवस्था ने इस भारतीय आदर्श को स्वीकार किया एवं पंथ निरपेक्षता की बात की। लेकिन विडंबना यह थी कि ये आदर्श उन महान शासकों द्वारा स्थापित किए गए थे जो शासन को उपयोग का नहीं बल्कि अपने कल्याण का साधन मानते थे। वे सत्ता को अधिकार नहीं दायित्व भाव से लेते थे लेकिन आजादी के बाद पनपे सोच में नए शासक उन पूर्ववर्ती शासकों के निकट भी नहीं ठहर पाते थे। इसलिए पंथ निरपेक्षता को धर्म निरपेक्षता बना दिया गया और इसके नाम पर किसी विशेष पूजा पद्धति को मानने वाले बहुसंख्यक लोगों का भय अल्पसंख्यक लोगों के समक्ष खड़ा किया गया और उनके इस भय का दोहन स्वयं की सत्ता की सीढ़ियां चढ़ने के लिए किया गया। उनको भय दिखाकर स्वयं का एक मुश्त वोटर बनाया गया एवं राजनीति के धर्म को भूलकर पंथ निरपेक्षता के नाम पर धर्म की राजनीति की जाने लगी। इसी धर्म की राजनीति ने धार्मिक अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यक शब्द का सृजन किया। जब अल्पसंख्यकों को प्रसन्न करने के लिए बहुसंख्यकों के हितों पर कुठाराघात किया गया तो प्रतिक्रिया में बहुसंख्यकों की राजनीति प्रारम्भ हुई। 2014 के चुनावों ने अल्पसंख्यक राजनीति पर बहुसंख्यक राजनीति हावी हुई। बहुसंख्यकों के एकमुश्त वोट हासिल करने के लिए अब अल्पसंख्यकों का भय दिखाया जाने लगा। इस प्रकार राजनीति का धर्म दिनों-दिन कमजोर होता जा रहा है और धर्म की राजनीति मजबूत होती जा रही है। अल्पसंख्यकों की राजनीति करने वाले भी गुजरात चुनावों में बहुसंख्यकों की राजनीति की ओर अग्रसर हुए और मंदिर-मंदिर घंटी बजाते घूमने लगे। कौन राजनीति के धर्म का पालन कर रहा है यह महत्त्वपूर्ण नहीं रहा बल्कि यह महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है कि कौन धर्म की राजनीति कितनी अधिक कर पा रहा है? जो इस अफीम को ठीक ढंग से पिला देता है वह उतना ही अधिक जनता को मूर्ख बनाने में सफल हो जाता है। यह मूर्ख बनाने का सिलसिला कभी मंदिर के नाम पर, कभी जनेऊ के नाम पर, कभी तलाक के नाम पर तो कभी राष्ट्रीयता के नाम पर लगातार जारी है। जनता भी यह सब भूलकर कि विगत 5 वर्षों में किसने राजनीति का धर्म निभाया, यह ध्यान रखती है कि चुनावों में किसने राजनीति में धर्म को कितना अधिक घुसाया और फिर उसी अफीम के नशे में जनता वोट डालती जाती है। वास्तव में तो भावनात्मक मुद्दों के बल पर राजनीति करने वाले लोग हमारी संवेदना का शोषण करने वाले लोग होते हैं लेकिन समाज और राष्ट्र की यह विडंबना है कि ऐसे लोग निरन्तर हमारा शोषण करते रहते हैं और हम शोषित होकर भी यह स्वीकार नहीं करते कि हमारा शोषण हो रहा है। पूज्य तनसिंह जी ने ऐसे ही लोगों को दानवता के क्रूर बसेरे कहा है।

बीकानेर में स्नेहमिलन

संघ स्थापना दिवस इस बार बीकानेर में समारोह पूर्वक मनाया गया। इसमें अनेक लोगों का कार्यकर्ताओं के रूप में सराहनीय सहयोग रहा। ऐसे सभी लोगों को बुलाकर 7 जनवरी को एक स्नेहमिलन संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में रखा गया। इस स्नेहमिलन में कार्यक्रम की समीक्षा की गई एवं समारोह में आए लोगों से निरन्तर सम्पर्क बनाए रखने की कार्य योजना बनाई गई। बैठक में तय किया गया कि बीकानेर शहर में छह बड़ी कॉलोनी है जहां राजपूत बहुतायत में रहते हैं। इन सभी में बारी-बारी से प्रतिमाह स्नेहमिलन रखे जाएं एवं उन्हें संघ के निकट लाया जाए। साथ ही बीकानेर शहर के निकट के गांवों में सम्पर्क यात्राओं का आयोजन किया जाए। ऐसी यात्राओं के बाद शिविरों व शाखाओं की योजना बनाई जाए। इसी प्रकार कोलायत, नोखा, डूंगरगढ़ क्षेत्र में भी सम्पर्क को प्रगाढ़ता में बदलने के लिए कार्यक्रम रखे जाने की योजना बनी। स्नेहमिलन में वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानीसिंह सूंई, क्षत्रिय सभा बीकानेर के अध्यक्ष बजरंगसिंह रॉयल, जोरावरसिंह भादला सहित सभी वरिष्ठजन, बीकानेर संभाग के प्रांत प्रमुख, संभाग प्रमुख, नवीनसिंह तंवर, भवानीसिंह मूंगेरिया, स्थापना दिवस कार्यक्रम के संयोजक भरतसिंह सेरुणा सहित सभी सहयोगी उपस्थित रहे।

बेण्यांकाबास में मृत्युभोज बंद

जयपुर के निकट स्थित गांव बेण्यांकाबास में 7 जनवरी को गांव के समाज बंधुओं ने बैठक कर मृत्युभोज को बंद करने का निर्णय लिया। गांव के ठाकुरजी के मंदिर में आयोजित बैठक में इसके साथ-साथ लावणा (विभिन्न अवसरों पर हर घर में बांटा जाने वाला खाद्य पदार्थ) लेने व देने की प्रथा को भी बंद किया। ये निर्णय सर्वसम्मति से हुए एवं सभी ने हस्ताक्षर कर अपनी सहमति दी।

खरी-खरी: प्रगति और इतिहास

अनेक प्रगतिवादी लोग प्रायः सामाजिक बैठकों में यह बात कहते हैं कि हमें इतिहास की कहानियां कहने की अपेक्षा भविष्य की बात करनी चाहिए। उनका यह मानना होता है कि इतिहास पर गर्व हमें आगे बढ़ने की अपेक्षा पीछे देखने का अभ्यस्त बनाता है। लेकिन जरा गंभीरता से विचार करें तो इस प्रकार की बात क्या उन महान चरित्रों के प्रति कृतज्ञ होने से रोक नहीं रही जिनके उस महान चरित्र ने हमें जन्मजात सिर उठाकर जीने के काबिल बनाया? क्या ऐसे तथाकथित प्रगतिवादी लोग इस बात को समझ सकते हैं कि इतिहास से बड़ा कोई शिक्षक नहीं होता? क्या ऐसे लोग यह सिद्ध कर सकते हैं कि दुर्गादास का निस्वार्थ संघर्ष हमें पीछे रहने की प्रेरणा देता है? क्या ऐसे लोगों के पास कोई इस प्रकार के तथ्य हैं जो यह सिद्ध कर सकें कि खेतसिंह रुपावत का कृतज्ञता ज्ञापन हेतु दाल की एक कटोरी के बदले अपना बलिदान करना हमें आगे नहीं पीछे धकेलता है? क्या वे उनके ही जैसे उन प्रगतिवादियों की पीड़ा को महसूस कर सकते हैं जिनका कोई जन्मजात उज्जवल इतिहास नहीं है और वे गौरवान्वित होने के लिए हमारे ही किसी पूर्वज को अपना बाप-दादा बनाने को लालायित हैं? निश्चित रूप से इतिहास का केवल गुणगान उचित नहीं है, गुणगान करना हमारा काम भी नहीं है लेकिन सहज ही उपलब्ध गौरवशाली इतिहास में छिपी प्रेरणा और शिक्षण से मुंह मोड़ना समझदारी के वेश में छिपी मूर्खता है। स्वयं की कुछ सामान्य सांसारिक उपलब्धियों के बल पर स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने की चेष्टा करने वाले लोग इस प्रकार की अहंकार मिश्रित बात करते हैं कि इतिहास हमें पीछे धकेलता है बल्कि श्रेष्ठ लोग तो अपने पूर्वजों के त्याग एवं उत्सर्ग मूलक गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ते हैं और जो इस प्रकार आगे बढ़ते हैं उनकी समस्त व्यक्तिगत उपलब्धियां भी सामाजिक न्यास बनकर प्रस्तुत होने को प्रेरित होती हैं ताकि उनका हिताधिकारी सम्पूर्ण समाज बन सके। लेकिन जो इस त्याग एवं उत्सर्ग मूलक इतिहास से मुंह मोड़ते हैं वे अपनी ही उपलब्धियों को स्वयं खाकर निःशेष हो जाते हैं।

कल्ला रायमलोत का बलिदान दिवस मनाया

गढ़ सिवाना का नाम इतिहास में अमर करने वाले बलिदानी वीर राव कल्ला जी रायमलोत का बलिदान दिवस 11 जनवरी को सिवाणा में समारोहपूर्वक मनाया गया। समारोह का आगाज स्थानीय विधायक हमीरसिंह भायल द्वारा कल्ला रायमलोत चौक पर स्थित मूर्ति पर माल्यार्पण से हुआ। समारोह को संबोधित करते हुए वरिष्ठ शिक्षाविद् जीवराज वर्मा ने कहा कि वीर पुरुषों की गाथाएं हमारी धरोहर है जो हमारा मार्गदर्शन करती है। इसको संजोना हमारा दायित्व है। पूर्व प्रधान मूलसिंह मवड़ी ने युवाओं द्वारा किए जा रहे इस प्रयास की सराहना की एवं सिवाना गढ़ के स्थापना दिवस को 'गढ़ सिवाना उत्सव' के रूप में मनाने को प्रेरणादायी पहल बताया। वीरसिंह धवेचा ने कल्लाजी के जीवन चरित्र से शिक्षा लेने की सीख दी। कार्यक्रम का संचालन करते हुए बलिदान दिवस कमेटी के हिन्दूसिंह सिणेर ने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए ऐसे आयोजनों को आवश्यक बताया। कार्यक्रम में खरताराम सोलंकी, डॉ. गणपतसिंह पाणवा, जगमालसिंह थोब, सोहनसिंह भायल, पूर्णसिंह सिणेर, गणपतसिंह गोलिया, जितेन्द्रपालसिंह गुड़ानाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में संघ के बालोतरा संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी भी अपने साथी स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे।

(पृष्ठ एक का शेष).... जागृति के...

गीता में वर्णित क्षत्रिय के सातों गुणों को अंतिम गुण ईश्वरीय भाव के साथ पुनर्स्थापित करने के आंदोलन के जनक पूज्य तनसिंह जी ने समष्टि की सेवा को ही परमेष्टि की उपासना का विधान बताया। उन्होंने समाज के प्रत्येक युवा में सुदर्शन चक्र धारण करने की क्षमता पैदा करने वाली दीर्घसूत्री परन्तु अकाट्य प्रणाली प्रस्तुत की। उन्होंने स्वयं को उदाहरण रूप में प्रस्तुत कर अपनी समस्त असाधारणताओं को सामाजिक न्यास बनाकर समाज के प्रत्येक व्यक्ति की साधारणता बनाने का अनोखा मार्ग प्रस्तुत किया। उन्होंने 'आपो दीपो भव' का नारा देकर अनेक युवाओं के हृदय में सामाजिक पीड़ा को जागृत कर जागृति के दीपक जलाए जो आज यत्र तत्र दीपलड़ी बनने को आतुर हैं। ऐसे ही सभी दीपक अपने जनक को कृतज्ञता अर्पित करने हेतु 25 जनवरी का इंतजार कर रहे हैं। अनेक लोग 25 जनवरी को बड़ा कार्यक्रम करने जा रहे हैं तो अनेक लोग 21 से लेकर 28 जनवरी तक साप्ताहिक कार्यक्रम बनाकर घर-घर में अपने निर्माता का संदेश पहुंचाने की योजना बना रहे हैं। अनेक स्थानों पर इस अवसर पर रक्तदान कर मानवीय जीवन की रक्षा में सहयोग का उद्यम किया जाना है। आईए हम सब पथप्रेरक के पाठक भी उन जागृति के जनक के प्रति कृतज्ञता प्रकट करें एवं अपने निकट होने वाले किसी कार्यक्रम में शामिल होवें।

'मेरा देश जल रहा है'

लोकतंत्र में क्या चल रहा है,
कोई खामोश है, कोई जहर उगल रहा है।
देखो तो नजर घुमाकर, मेरा देश जल रहा है।
कुछ वर्षों की खामोशी, फिर द्वेष के बीज,
उग कर बन गया विषैला पौधा,
किसने बोया था, कौन इसे काटेगा?
कोई है जो विचारों से फिसल रहा है।
मन ही मन किसके, क्या चल रहा है?
धुआं देखकर लगता है, कुछ जल रहा है।
आंख खोलकर देखो, मेरा देश जल रहा है।
दूध पिलाते रहे सांपो को,
ढ़ोते रहे हम अन्यों के पापों को।
अंधेरा फैल रहा है, ज्यों सूरज ढल रहा है।
आस्तीन में सांप हमारे ही पल रहा है।
कुछ सपोलो के मन, आजादी का स्वप्न पल रहा है।
उनके ही इशारों पर मेरा देश जल रहा है।

-भागीरथसिंह थुंबा

कुलथाना (प्रतापगढ़) में शिविर

मेवाड़ संभाग के प्रतापगढ़ जिले के कुलथाना में 28 से 31 दिसम्बर तक प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ। इस शिविर में कुलथाना, देवद, सेलारपुरा बड़ा, सेलारपुरा छोटा, बिलेसरी, मोखमपुरा, हल्दुनी, दलोट, कुणी, पीलु, बारोठ आदि गांवों के शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला ने नरेन्द्रसिंह नरधारी, हनुवंतसिंह सज्जनसिंह का गड़ा, लाखनसिंह लांबा पारडा, भगतसिंह बेमला, स्वरूपसिंह बिजेरी आदि के सहयोग से किया। व्यवस्था का दायित्व गांव के समाज बंधुओं ने निभाया।

सुल्ताना में स्नेहमिलन

जैसलमेर के सुल्ताना गांव में 4 जनवरी को संघ का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें गांव के युवाओं ने शिरकत की। स्नेहमिलन को जितेन्द्रसिंह पारेवर, सवाईसिंह, कमलसिंह सुल्ताना आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने क्षात्र धर्म, सामाजिक कुरीतियों व रूढ़ियों, सांस्कृतिक प्रदूषण आदि पर चर्चा की गई एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर पूर्वजों के आदर्शों को अपनाने की बात कही गई।

रणधा बंधुओं को पितृशोक

संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा एवं जैसलमेर संभाग के संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा के पिता रतनसिंह रणधा का विगत 30 दिसम्बर को 84 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। भरे पूरे परिवार को छोड़कर गए स्व. रतनसिंह अपने क्षेत्र में चिकित्सक के रूप में प्रसिद्ध थे एवं अपने अनुभव के आधार पर अनेक बीमारियों का देसी इलाज करते थे। इनके तीन पुत्रों में से दो गोपालसिंह व प्रेमसिंह, भतीजे रावतसिंह, पौत्र हमीरसिंह, सतीदानसिंह, प्रवीण सिंह, जेठूसिंह, दिलीपसिंह, प्रद्युम्नसिंह संघ के स्वयंसेवक हैं।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
साल बचायें (NIOS) साल बचायें
शिक्षा सर्वधन प्रधानम
कोई भी कक्षा फेल या पास साक्षर व्यक्ति आधार कार्ड से सीधे 10वीं में प्रवेश लें, 10वीं पास सीधे 12वीं करें।
(कोई उम्र का बंधन नहीं, कोई T.C. की जरूरत नहीं)
आवेदन: जनवरी-फरवरी में ▶▶परीक्षा : सितंबर-अक्टूबर में
स्कूल छोड़ चुकी बालिकाओं व महिलाओं के शिक्षित होने का सुनहरा अवसर
जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूं
द्वारा घर बैठे पत्राचार द्वारा B.A., B.Com. MA व योग शिक्षा में MA
फार्म : जनवरी-फरवरी में ▶▶परीक्षा : जुलाई-अगस्त में
सरपंच बनने, राशन डीलर बनने, ड्राईविंग लाईसेंस बनवाने, नरेगा मेट, आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता, आशा सहयोगिनी बनने तथा फौज, सरकारी नौकरी, व्यवसाय, विदेश जाने आदि के लिए डिग्री, डिप्लोमा के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सुनहरा अवसर
आदर्श सीनियर सैकेण्डरी स्कूल
सोलंकियातला, तह. शेरगढ़, जिला जोधपुर
प्रबंधन : सांगसिंह 9783202923

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	दंपत्ति शिविर	27.01.2018 से 30.01.2018 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, **बाड़मेर।** (यह शिविर 55 वर्ष (पति की) तक की आयु वाली दंपत्ति के लिए है। अकेले पुरुष या महिला को अनुमति नहीं होगी)। संघ के न्यूनतम तीन शिविर किए हुए महिला अपने पति के साथ या पुरुष अपनी पत्नी के साथ शिविर में शामिल हो सकेंगे।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

एकलव्य का अंगूठा-3

स्व. सांसद फूलनदेवी द्वारा नई दिल्ली के एक कक्ष में 'एकलव्य सेना' के गठन के अवसर पर सोमवार, दिनांक 6 फरवरी 1995 को स्वामी अड़गड़ानंद जी द्वारा उनकी जिज्ञासा पर दिया गया प्रवचन 'एकलव्य का अंगूठा' नामक छोटी पुस्तिका में संकलित है उसे यहां धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया जा रहा है -

आचार्य परशुराम

कर्ण भी आचार्य द्रोण से शिक्षा लेने आया था। उसे यहां से उत्तर मिला, 'मैं क्षत्रिय राजकुमारों को ही पढ़ाता हूं।' कर्ण ने कौरव-पाण्डवों से भिन्न एक युवक को इंगित कर पूछा, 'गुरुवर!' यह युवक कौन है?' उन्होंने बताया, 'मेरा पुत्र अश्वत्थामा!' कर्ण ने कहा, 'ओह! यह न तो क्षत्रिय है, न राजकुमार! प्रणाम गुरुदेव!' द्रोण अभी इस होनहार बालक के लिए विचार ही कर रहे थे कि वह निकल गया उनके भी गुरु परशुराम के पास! उसने सोचा, उन गुरुदेव में यह कमी थी कि क्षत्रिय राजकुमार को नहीं पढ़ाते हैं, आचार्य परम्परा के बच्चों को ही पढ़ाते हैं क्योंकि काशिराज की जिन कन्याओं का अपहरण उनके शिष्य भीष्म ने किया था उनमें से एक अम्बा शाल्व नरेश को अपना पति मान बैठी थी। भीष्म द्वारा भेजने पर शाल्व नरेश ने उसे अंगीकार नहीं किया। इस दुर्दशा का कारण भीष्म को मानकर उसने भीष्म से ही परिणय का प्रस्ताव रखा किन्तु प्रतिज्ञाबद्ध भीष्म को विवाह के लिए प्रस्तुत न देख उसने उनके गुरु परशुराम जी से ऐसा कराने का अनुरोध किया। परशुराम जी ने भीष्म को अम्बा से विवाह कर लेने को कहा, जिसे अस्वीकार करने पर उन्होंने भीष्म से युद्ध किया और युद्ध में पराजित होने पर उन्होंने एक व्रत ले लिया कि अब किसी क्षत्रिय को युद्धकला की शिक्षा नहीं दूंगा, वे अपनी प्रतिज्ञा के समक्ष गुर्वादेश की परवाह भी नहीं करते।

कर्ण ने इन आचार्य से शिक्षा लेने का निश्चय कर लिया। छह महीने रुककर उसने चोटी का घेरा बढ़ा लिया। पुराने जमाने में आचार्य परम्परा के लोग गाय के खुर की तरह चोटी रखते थे। कर्ण ने यज्ञोपवीत पहना, वंशावली रट लिया और परशुराम जी के पास पहुंच गया। उन्होंने पूछा, 'वत्स कौन हो?' कर्ण ने कहा, 'ब्राह्मण!' 'कौन ब्राह्मण?' कर्ण ने शाखा-प्रशाखा, गोत्र, प्रवर रटा रटाया सब कुछ बता दिया। प्रवेश मिल गया। गुरुजी पढ़ाते एक फीट वह पढ़ लेता एक मीटर क्योंकि युद्ध-कौशल उसके संस्कार में था, रक्त में था, वह देवपुत्र जो था। एक दिन उन्होंने अन्तिम अस्त्र-ब्रह्मास्त्र भी कर्ण को प्रदान कर दिया। कर्ण ने निवेदन किया, 'प्रभु! गुरुदक्षिणा के लिए आदेश करें।' परशुराम ने कहा, 'कर्ण तुम्हारे जैसा शिष्य भाग्यवान गुरुओं को प्राप्त होता है। दीर्घकाल से मैं इस तलाश में था कि कोई योग्य शिष्य मिले। भीष्म योग्य थे किन्तु तूं उनसे भी बढ़-चढ़कर है। मेरी दी हुई विद्या का सदुपयोग करना यही सच्ची गुरुदक्षिणा होगी।'

गुरुदेव थककर लेट गए। कर्ण ने अपनी जंघा पर उनका सिर रख लिया। तभी अलर्क नामक वज्रकीट जमीन से निकल कर कर्ण की जांघ काटने लगा। गुरुदेव के विश्राम में व्यवधान न पड़े, सोचता हुआ कर्ण उसे सहन करता रहा। जांघ में छेद करने के उपरान्त उस कीट ने ज्योंही गुरुजी की कनपटी में पंजा मारा वे झझककर बैठ गए। रक्त बहने का कारण पूछने पर कर्ण ने कहा, 'कोई कीटाणु काट रहा था।' गुरुजी ने पूछा, 'तुमने पांव हटाया क्यों नहीं?' कर्ण ने कहा, 'गुरुदेव आपकी निद्रा भंग हो जाती! आपकी सेवा से बड़ी जांघ तो नहीं है। कीड़े-मकोड़े तो काटा ही करते हैं!' 'कौन-सा वर्ण बताया था तूने?' कर्ण ने कहा, 'ब्राह्मण!' परशुराम जी सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने कहा, 'सच बोल! कौन है तू? कष्ट सहन करने की यह क्षमता ब्राह्मणों में नहीं होती।' कर्ण ने बताया, 'मैं सूतपुत्र हूं!' उन्होंने कहा, 'सूतों में भी यह क्षमता नहीं होती! तुम क्षत्रिय हो' तुमने छल से मुझसे शिक्षा ले ली। जाओ! जब तुम युद्ध में घिर जाओगे, मेरी दी हुई शिक्षा तुम्हें विस्मृत हो जाएगी! ऐसा ही हुआ। जब अर्जुन से मुकाबला हुआ, प्राणों पर संकट आया, कर्ण ने बहुत स्मरण किया, विद्या विस्मृत हो गई। कर्ण मारा गया। द्रोण ने तो अंगूठा ही लिया किन्तु परशुराम जी ने तो प्राण ही ले लिए। वह भी ऐसे शिष्य के जिसके लिए गुरु फूले नहीं समा रहे थे कि ऐसा शिष्य तो भाग्यवान् गुरुओं को प्राप्त होता है। उसी शिष्य को मृत्यु का आशीर्वाद दे डाला। जबकि कर्ण इस तथ्य से अवगत नहीं था कि वह क्षत्रिय है।

परशुराम जी क्षत्रिय जाति के विरोधी रहे हो, ऐसी भी कोई बात नहीं है। वे क्षत्रियों के वैरी कदापि नहीं थे। वहीं जनक थे, दशरथ जी थे- उनसे छोटा सा भी विवाद कभी नहीं हुआ। शस्त्रधारियों का उच्छृंखल होना स्वाभाविक है। ऐसे उद्दण्ड, मदान्ध, अराजक तत्त्वों का ही उन्होंने उन्मूलन किया था। रावण को भी वश करने में समर्थ, हैहयवंशीय सहस्त्रार्जुन को उन्होंने पराभूत किया था। वे रावण को भी मार सकते थे किन्तु नियति का जो विधान था उसे उन्होंने वैसा ही होने में कल्याण समझा।

घटना कुछ इस प्रकार है। एक समय महापराक्रमी रावण दल-बल सहित शिवार्चन हेतु अमरकण्टक क्षेत्र में आया। सैनिकों ने पूजन के लिए पुष्पों का पहाड़ सा लगा दिया। रावण ने मृत्तिका से ही शिवलिंग बनाया और नर्वदा तट पर आराधना में तल्लीन हो गया। कुछ ही दूर पर हैहयवंशीय सम्राट सहस्त्रार्जुन अपनी रानियों के साथ जलक्रीड़ा कर रहे थे। विनोद में ही उन्होंने अपनी भुजाओं से नर्वदा का प्रवाह अवरुद्ध कर दिया। जलस्तर उठने लगा। रावण के समीप पूजा के फूल बह चले। रावण के सेनापति प्रहस्त ने जाकर देखा कि मामला क्या है? उसने तुरन्त आक्रमण कर दिया। सहस्त्रार्जुन ने उसका आक्रमण विफल कर उसे पलायन के लिए विवश कर दिया।

अपने चारों ओर जल-प्रवाह देख रावण स्वयं आया। वह सहस्त्रार्जुन से मल्लयुद्ध करने लगा। सहस्त्रार्जुन ने रावण को विवश कर बन्दी बना लिया, रावण की सेना को मार-पीट कर भगा दिया। महर्षि पुलस्त्य के संज्ञान में यह घटना आई। उन्होंने अपने पौत्र को मुक्त कराया। कालान्तर में यही सहस्त्रार्जुन तथा उसकी सन्तानें उत्पाती हो गए। महर्षि यमदग्नि की गाय के बछड़े को मार दिया, उनकी गाय ले ली। प्रतिरोध करने पर उन्होंने महर्षि की हत्या भी कर दी। उनकी पत्नी रेणुका ने अपने पुत्र परशुराम से सब कुछ कह सुनाया। परशुराम जी ने उन सब लड़कों को मार गिराया। रावण को भी पराभूत करने वाले सहस्त्रार्जुन की भुजाओं को परशुराम ने उच्छेद कर डाला। पराक्रम की कमी नहीं थी। इनमें! लेकिन यह महापुरुष जानते थे कि किसका वध, किस काल में, किसके द्वारा संभव है। इसीलिए वे रावण का वध करने वाला धनुष कोदंड कंधे में लटका कर घूम रहे थे और उपयुक्त पात्र की प्रतीक्षा में थे। ज्योंही अवसर आया वह धनुष एक क्षत्रिय को ही समर्पित कर दिया।

भीष्म के हाथों पराजित होने पर भी बहुत स्नेह से वे भीष्म का स्मरण करते थे। तभी तो उन्होंने कर्ण से कहा, 'भीष्म मेरा योग्य शिष्य है किन्तु तुम उससे भी इक्कीस हो!' यदि भीष्म से ईर्ष्या होती तो कह देते, 'कर्ण! भीष्म को पराजित करके आओ, यही गुरु-दक्षिणा।' किन्तु ऐसा कुछ नहीं था। कर्ण को भी शाप मिला वह भी होनी थी। महाभारत, कर्णपर्व के सत्तासीवें अध्याय में है कि इन्द्र के संशय पर ब्रह्माजी ने बताया था, 'कर्णश्च दानवः पक्ष अतः कार्यः पराजयः'- कर्ण दानव पक्ष का पुरुष है अतः उसकी पराजय करनी चाहिए।' परशुराम जी इस रहस्य से परिचित थे। धर्म पर दृष्टि रखने वाले महापुरुषों से होनी व्यक्त होती रहती है। इस शाप से भी कर्ण के मन में उनके प्रति कभी अश्रद्धा नहीं हुई। युद्ध में 'मैं परशुराम का शिष्य!' ऐसे उद्‌गार उनके मुख से निकलते ही रहते थे।

आचार्य द्रोण से जिज्ञासा की कर्ण ने, 'आपने एकलव्य से उसका अंगूठा क्यों ले लिया?' आचार्य ने समाधान किया, 'उस एकलव्य से धनुष के अंकुर हस्तिनापुर की ओर आते मुझे दिखाई दे रहे थे क्योंकि उसका पिता जरासंध का सेनापति था।' आचार्य (शिक्षक) लोग बड़ी दूर की सोचते थे किन्तु शाश्वत सत्य धर्म के विषय में सोचने की क्षमता इन आचार्य गुरुओं में कभी नहीं थी। ऐसी क्षमता केवल सद्‌गुरुओं में होती है। वही सद्धर्म के अन्वेषी हैं।

स्मृतियां : इन्हीं आचार्य गुरुओं के नाम से प्रचलित स्मृतियां हैं जो धर्मशास्त्र के रूप में प्रचलित हैं। जो व्यामोह इन आचार्यों के चरित्र में है-पुत्र मोह, जीविका मोह, व्यक्तिगत मान-प्रतिष्ठा वही सब स्मृतियों में कूट-कूट कर भरा है। उसमें भी इन आचार्यों के लिए आरक्षण है-मंत्री पद का आरक्षण, न्यायपद का आरक्षण, शिक्षक पद का आरक्षण, सुख-सुविधाओं का आरक्षण! पुत्रमोह में जितना विकल अंधा धृष्टराष्ट्र है (कैसे पाण्डव मर जाएं! कैसे मेरा प्रिय दुर्योधन सम्राट बन जाए! सम्राट हो गया तो और बड़ा हिस्सा पा जाए) उतना ही ये आचार्य विकल थे।

एक दिन आचार्य द्रोण को युद्ध में सुनाई पड़ा, '**अश्वत्थामा हतो...**' जहां इतना सुनना था अधीर हो उठे, मुट्ठियों का कसाव ढीला पड़ गया, धनुष हाथ से गिर गया, किंकर्तव्यविमूढ़ होकर बैठ गए। इतने में गला कट गया। पुत्र-मोह में जितना धृतराष्ट्र विकल है उतना ही द्रोण भी विकल है किन्तु सद्‌गुरुओं के पास न पुत्र-मोह होता है न जीविका मोह और न सम्मान की लिप्सा। सृष्टि में ऐसा कुछ है ही नहीं जिसके द्वारा सत्पुरुषों को सम्मान मिल सके। पूज्य महाराज जी कहा करते थे, 'पूरा संसार तुम्हें साधु कहे, संत-शिरोमणि कहे, तुम्हें रोने को आंसू नहीं मिलेगा! आत्मा तुम्हें साधु कहे तो तुम साधु हो; दुनिया कहे चाहे न कहे। भाड़ में जाए दुनिया! भगवान् कहें सन्त तो सन्त हैं, अन्यथा कदापि नहीं!' सृष्टि में ऐसा कोई प्रमाण-पत्र नहीं है जो उन्हें सम्मानित कर सके।

महापुरुष सभी रीति-रिवाजों से मुक्त होते हैं जबकि इन रीति-रिवाजों का ही संकलन स्मृति ग्रन्थों में पाया जाता है। भगवान् बुद्ध के पश्चात् ईसा के दो-तीन सौ वर्ष पहले से इन स्मृतियों को लिखना आरम्भ किया गया और फिर दो-तीन सौ साल बाद तक लिखते चले गए। यह मनुस्मृति, पाराशर स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति इनमें से कोई भी उन महापुरुषों की लिखी नहीं है जिनके नाम से इन्हें चलाया गया है। उदाहरण के लिए मनुस्मृति महाराज मनु की रचित नहीं है क्योंकि '**स्वायंभुव मनु अरु शतरूपा। जिनते भई नर सृष्टि अनूपा।**' स्वायंभुव अर्थात् स्वयं कर्ता-धर्ता महाराज मनु और माता सत्य स्वरूपा जिनसे अनुपम सृष्टि की उत्पत्ति हुई। जिसकी कोई तुलना नहीं, जिसकी कोई उपमा नहीं वहां कोई अस्पृश्य कैसे हो गया? क्या कोई पिता अपने चार पुत्रों में से एक को अति पावन दूसरे को अति निकृष्ट कहकर संबोधित कर सकता है कि छाया पड़ जाने पर स्नान करो? अनुपम में घृणित कैसा? मनु के अनन्तर चौदह पीढ़ियों तक, चौदह मन्वन्तरों तक यह क्रम चलता रहा। आबादी जब थोड़ी घनी हो गई तब प्रजपाति युग आया। प्रजापति मरीचि, प्रजापति कश्यप, प्रजापति दक्ष इत्यादि लोकविश्रुत हैं। प्रजापति कश्यप की कई रानियां थी। उनमें से दो रानियों तथा उनके पुत्रों में स्पर्धा एवं ईर्ष्याभाव देख प्रजापति कश्यप ने भूभाग दो हिस्सों में बांट दिया। दिति के लड़के दानव तथा अदिति के देवता पृथक्-पृथक् रहने लगे। परस्पर वर्चस्व के संघर्ष होते रहे। देवगुरु बृहस्पति और दैत्यगुरु शुक्राचार्य पीठ ठोंक-ठोंक कर उन्हें लड़ाते ही रह गए। यह आचार्यों की लगाई हुई लड़ाई है अन्यथा आरंभ में देवता और दानवों में मधुर संबंध भी थे। दानवराज पुलोमा की कन्या शची से देवराज इन्द्र का परिणय हुआ था। देवगुरु की कन्या जयन्ती शुक्राचार्य की अर्द्धांगिनी थी। हीनता और उच्चता का भाव इन आचार्यों की देन है जिनकी पहुंच सामाजिक शिक्षा तक है। मनुस्मृति के चौथे अध्याय में नट, दर्जी, केवट, सुनार, धोबी, धरिकार, चमार, नाई इत्यादि जिन जातियों का उल्लेख है, मन्वन्तर काल में उनका विभाजन ही नहीं था। उस काल में शब्दकोष में ये शब्द ही नहीं थे। महाभारत काल तक भैंस को जंगली जानवर के रूप में जाना जाता था। भीम के मारे हुए जंगली जानवरों में भैंसों का उल्लेख है किन्तु मनुस्मृति के पांचवें अध्याय में है कि जंगली जानवरों में भैंस का दूध लिया जा सकता है। प्रतीत होता है कि दुधारू पशु के रूप में उसकी धर-पकड़ शुरू हो गई थी। अस्तु, इस स्मृति को मानव के आदि पूर्वज मनु की रचना कैसे स्वीकार की जाए? **(क्रमशः)**

(पृष्ठ एक का शेष)

वीरम चौकी (जालोर)

नन्हा प्रहरी (गडियाला)

रोजदा

संघ के...

इस वर्ष 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक तीन माध्यमिक प्रशिक्षण आयोजित किए गए। जालोर संभाग का शिविर वीरमदेव राजपूत छात्रावास जालोर में रखा गया जिसका संचालन केन्द्रीय कार्यकारी रामसिंह माडपुरा ने किया। शिविर में प्रारम्भ के दो दिन संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास भी उपस्थित रहे। इस शिविर में जालोर, सिरोही एवं पाली जिलों की विभिन्न शाखाओं से 156 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में एक दिन जालोर के ऐतिहासिक किले का भ्रमण कार्यक्रम रखा गया। भ्रमण के दौरान ऐतिहासिक वीरमदेव चौकी पर बौद्धिक सत्र का आयोजन कर वीरमदेव जी के उज्ज्वल चरित्र से प्रेरणा ली गई। संचालन प्रमुख बैण्यांकाबास ने शिविर में अपने प्रवास के दौरान शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप्त पुरुषों का चरित्र हमारे श्रेष्ठ कर्मों की कसौटी है। उन्होंने कहा कि कर्म में यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि कितना कर रहे हैं या कैसे कर रहे हैं बल्कि यह महत्त्वपूर्ण है कि क्यों कर रहे हैं? कर्म में निहित भावना ही उसकी श्रेष्ठता की कसौटी होती है। उन्होंने उद्देश्य के बौद्धिक के दौरान कहा कि कर्मवाद एवं पुनर्जन्मवाद के सिद्धान्त हमें सद्कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। शिविर की व्यवस्था का दायित्व स्थानीय सहयोगियों के सहयोग से प्रांत प्रमुख गणपतसिंह भंवराणी ने संभाला वहीं संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी ने शिविर संचालन में सहयोग दिया।

बीकानेर के गडियाला में इसी अवधि के दौरान मा.प्र.शि. आयोजित हुआ जिसका संचालन चुरू प्रांत प्रमुख राजेन्द्रसिंह आलसर ने किया। शिविर में बज्जू, पूंगल, कोलायत, भादला, मोरखाना, नोखा, डूंगरगढ़, रतनगढ़, सरदारशहर, चुरू, बीकानेर शहर के साथ-साथ नागौर संभाग के नागौर व मेड़ता से शिविरार्थी शामिल हुए। शिविर में अंतिम दो दिन संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास व केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ का भी सानिध्य लाभ मिला। शिविर के आयोजन की व्यवस्था गडियाला सरपंच गजेन्द्रसिंह ने ग्रामवासियों के सहयोग से की। शिविर की समाप्ति पर विदाई संदेश देते हुए शिविर संचालक राजेन्द्रसिंह आलसर ने कहा कि जो यहां प्राप्त किया है उसे समाज में जाकर विस्तारित करना है एवं अपनी ही तरह अन्य लोगों को भी संघ के सम्पर्क में लाना है। उगमसिंह आशापुरा, करणीसिंह भेळू, रेवंतसिंह जाखासर आदि प्रांत प्रमुख अपने साथी स्वयंसेवकों के साथ संचालन में सहयोगी बने।

30 दिसम्बर को शिविर में सहयोगी ग्रामवासियों एवं पड़ौसी गांवों के समाज बंधुओं का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें सांघिक परम्परानुसार शुभारम्भ पश्चात् परिचय कार्यक्रम रखा गया। उपस्थित समाज बंधुओं को संबोधित करते हुए केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने संघ का क्रमिक विकास बताते हुए कार्यप्रणाली का वर्णन किया। संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने अपने उद्बोधन में कहा कि क्षत्रियों ने मर्यादापूर्वक जीवन जीया जिससे वे संसार के आराध्य बन गए, उनकी जीवनी का धर्मग्रन्थ के रूप में मान्यता मिली। ध्रुव, प्रहलाद आदि ने उम्र की सीमा तोड़कर क्षत्रिय जीवन की सार्थकता स्थापित की। ऐसे ही सार्थक जीवन की पाठशाला है श्री क्षत्रिय युवक संघ जिसके संस्थापक पूज्य तनसिंह ने अपने पूरे जीवन को सामाजिक धरोहर बना दिया। उनका पूरा जीवन उनकी राजनीति, व्यापार, लेखन, अध्यात्म आदि सभी समाज सापेक्ष थे और अपना सब कुछ उन्होंने इस समाज को आराध्य मानकर इसे अर्पित किया। स्नेहमिलन को एडवोकेट महेन्द्रसिंह गडियाला, भवानीसिंह मूंगेरिया, मेघसिंह सेवड़ा, जीवराजसिंह गिरांधी आदि ने भी संबोधित किया। स्नेहमिलन में गडियाला, गोविन्दसर, मंडाल, गिरान्धी, गिरिराजसर, हिराई, नया गांव, सोलंकियों की ढाणी, मेडी का मगरा आदि गांवों के समाज बंधु शामिल हुए।

25 से 31 दिसम्बर तक ही जोधपुर संभाग का मा.प्र.शि. शेरगढ़ प्रांत के तेना गांव में संपन्न हुआ। शिविर का संचालन जोधपुर के संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास ने किया। इस शिविर में सेखाला, बेलवा, देवातु, चाबा, खिरजां, देचू, गोपालसर, बेदू, बालेसर, बस्तवा, सोलंकियातला, भाळू, तेना के अतिरिक्त जैसलमेर के राजमथाई, भैंसड़ा, सोनू, रामगढ़ सहित बाड़मेर के शिविरार्थियों ने प्रा.प्र.शि. से अग्रेतर प्रशिक्षण प्राप्त किया। 29 दिसम्बर को पूरे शिविर का शिविर स्थल से 5 किमी दूर स्थित पहाड़ी पर भ्रमण कार्यक्रम रखा गया। शिविर की व्यवस्था लूणकरणसिंह तेना ने भगवानसिंह, जब्बरसिंह, गंगासिंह, गायड़सिंह आदि ग्रामवासियों के सहयोग से की। शिविर में दो दिन संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास व एक दिन वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकरसिंह महरोली का सानिध्य मिला। भैरूसिंह बेलवा, भरतपालसिंह दासपां, पदमसिंह रामगढ़ आदि स्वयंसेवकों ने संचालन में सहयोग किया।

31 दिसम्बर से 6 जनवरी तक जयपुर जिले के रोजदा में शिविर हुआ जिसमें रोजदा, बुगालिया, जेतपुरा, बैण्यांकाबास, महरोली, मुण्डरू, खोरी, जुलियासर, खुड़दी, कासली, खोरण्डी, अगरोट, छापड़ा, झापड़ावास, मोचिंगपुरा, दांतली, जालिया, जैतपुरा, भीमड़ावास, सारण का खेड़ा, गांगलास आदि गांवों के शिविरार्थी शामिल हुए। इसके अलावा जयपुर शहर के स्वयंसेवक अधिसंख्या में थे। कोटा व करोली से भी स्वयंसेवक शिविर में पहुंचे। शिविर की व्यवस्था राजपूत सभा जयपुर के महामंत्री बलवीरसिंह हाथोज व गोपालसिंह रोजदा के नेतृत्व में स्थानीय ग्रामवासियों ने की। प्रांत प्रमुख देवेन्द्रसिंह बड़वाली व मदनसिंह बामण्या ने अपनी टीम सहित व्यवस्था संभाली। वहीं नागौर संभाग प्रमुख शिंभुसिंह आसरवा, जयपुर शहर के प्रांत प्रमुख सुधीरसिंह ठाकरियावास, जयपुर उत्तर पूर्व (ग्रामीण) के प्रांत प्रमुख रामसिंह अकदड़ा, उत्तरप्रदेश के प्रांत प्रमुख जितेन्द्रसिंह सिसरवादा व शेखावाटी प्रांत प्रमुख जुगराजसिंह जुलियासर ने अपने साथी स्वयंसेवकों सहित संचालन में सहयोग किया। शिविर में दो जनवरी को माननीय संघ प्रमुख श्री संचालन प्रमुख व अन्य वरिष्ठ स्वयंसेवकों का सानिध्य मिला। माननीय संघ प्रमुख श्री ने ईशोपनिषद के प्रारंभिक मंत्र एवं राजा जनक व अष्टावक्र संवाद के माध्यम से बताया कि यह सृष्टि ईश्वर का ही स्वरूप है। सृष्टि में हमारी सभी गतिविधियां ईश्वरोन्मुख हों, हमारा अंतर पवित्र हो इस हेतु श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें साधना में रत करता है। संघ संसार की उपेक्षा किए बिना संसार में रहकर संसार से ऊपर उठने का मार्ग बताता है और आप सभी सरलता पूर्वक अनायास ही शिविर के विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा उधर ही बढ़ रहे हैं।

6 जनवरी को शिविरार्थियों को विदाई देते हुए बताया गया कि हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं, इसका अहसास हमने शिविर में किया है, इस अहसास को बनाए रखना है। साथ ही हमारे अंतर में इन सात दिनों में एक संघर्ष प्रारम्भ हुआ है, एक युद्ध का सूत्रपात हुआ है, उसे समाप्त नहीं होने देना है, जागृत रखना है और जब कभी वह संघर्ष शांत होने लगे, मंद पड़ने लगे, फिर से ऐसे ही किसी मेले में शामिल होकर उसे पुनः जागृत करना है।

मात्र...

इसलिए संगठन तात्कालिक भावावेश में होने वाला एकत्रीकरण नहीं है बल्कि निरन्तर अभ्यास के द्वारा संगठन को स्वभाव बनाने की प्रक्रिया है। इसी प्रक्रिया का अभ्यास इस शिविर में किया जा रहा है। राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा ने आजादी के बाद सामाजिक भाव को बढ़ाने वाली संस्थाओं का उल्लेख करते हुए युवाओं के शिक्षण में संघ की भूमिका की प्रशंसा की।

तेना

स्नेहमिलन (गडियाला)

नाथाजी स्मृति समारोह मनाया

वीर शिरोमणी नाथाजी स्मृति संस्थान द्वारा विगत 7 जनवरी 2017 को जयपुर के वैशाली नगर स्थित शिवकुंज सभागार में नाथावत वंश प्रवर्तक नाथाजी की स्मृति में समारोह का आयोजन किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर ने नाथाजी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का उल्लेख करते हुए कहा कि भगवान ने गीता में क्षत्रिय के सात गुण बताए हैं। इनमें से अंतिम गुण ईश्वरीय भाव सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और वही इससे पहले के छह गुणों की सार्थकता सिद्ध करता है। उन्होंने कहा कि प्रारम्भ के छह गुण हमारे में कमोबेस हमेशा रहे हैं और आज भी हैं लेकिन सातवां गुण ईश्वरीय भाव हमारे इन गुणों को ईश्वरीय योजना के अधीन लाता है। हम इसी भाव के कारण हमारी क्षमताओं का सृष्टि में ईश्वरीय दृष्टिकोण के अनुरूप उपयोग करते हैं, विश्वात्मा का दृष्टिकोण हमारे में इसी गुण के कारण आता है इसलिए आज इसी गुण को अपनाने की सर्वाधिक आवश्यकता है। पूर्व विधायक प्रतापसिंह खाचरियावास ने अपने उद्‌बोधन में समाज की राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति का विवेचन प्रस्तुत किया। भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी भंवरसिंह लोहरवाड़ा ने युवाओं से योजनाबद्ध कठिन परिश्रम का आह्वान किया। राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराज सिंह लोटवाड़ा, मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा, राजस्थान राजपूत परिषद मुंबई के अध्यक्ष रघुनाथसिंह सराणा, रुक्षमणी कुमारी आदि ने अपने विचार साझा किए। योगेन्द्रसिंह मेघसर ने आरक्षण विषय पर अपनी बात रखी वहीं वृंदावन से आए संत बालकदास जी ने आशीर्वचन दिए। संस्थान के महासचिव मोतीसिंह सावली ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। संस्थान की स्मारिका 2018 का विमोचन भी किया गया। प्रतिभाओं का सम्मान करते हुए बोर्ड परीक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले छात्र-छात्राओं, राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों, समाजसेवियों एवं वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान किया गया। समारोह स्थल पर रक्तदान शिविर एवं निःशुल्क रोग जांच व परामर्श शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 100 युनिट रक्त एकत्र किया गया।

गिरी सुमेल में 474वां बलिदान दिवस मनाया

शेरशाह सुरी की 80 हजार की विशाल सेना को अपने 8000 साथियों के साथ नाकों चने चबाने को मजबूर करने वाले वीर जेता कूंपा का 474वां बलिदान दिवस प्रतिवर्ष की भांति 5 जनवरी को समारोहपूर्वक मनाया गया जिसमें हजारों लोगों ने शिरकत की। विगत 34 वर्षों से सुमेल स्थित रणक्षेत्र में कानसिंह उदेशीकुंआ व उनके सहयोगियों द्वारा यह बलिदान दिवस मनाया जा रहा है। समारोह को संबोधित करते हुए राजस्थान सरकार के उद्योग मंत्री राजपालसिंह शेखावत ने गिरी सुमेल युद्ध को हल्दीघाटी जितना ही महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने स्थान को विकसित करने के लिए सरकार से बजट आवंटन करवाने का आश्वासन दिया। ई. 1544 में हुए इस युद्ध के रणबांकुरों को श्रद्धांजलि देने के लिए इस वर्ष नई पहल की गई एवं उनकी स्मृति में श्रीफल अर्पित करने की परम्परा प्रारम्भ की गई। अगले वर्ष सभी आंगतुकों से श्रीफल साथ लाने का आह्वान किया गया। उल्लेखनीय है कि यह युद्ध किसी साम्राज्य की रक्षा के लिए नहीं बल्कि अपनी भूमि एवं लोगों के प्रति ममत्व के कारण लड़ा गया। राजा मालदेव बिना लड़े पीछे हट गए थे लेकिन जेता कूंपा ने अपने 8 हजार साथियों सहित लोगों के विश्वास को कायम रखने के लिए बलिदान दिया। समारोह को पूर्व सांसद गोपालसिंह शेखावत, पशुपालन बोर्ड के अध्यक्ष गोरधन देवासी, पूर्व विधायक खुशवीरसिंह जोजावर, संत समताराम, केसरसिंह गढ़ सिवाणा, संयोजक कानसिंह उदेशी कुंआ, मारवाड़ राजपूत सभा के हनुमानसिंह खांगटा, नारायणसिंह आकड़ावास, बलिदान समिति के अध्यक्ष भगवतीसिंह निमाज, सह संयोजक रामसिंह हाजीवास के साथ-साथ भगवतसिंह मोहरा कला, हनुमानसिंह भैंसाणा, नारायणसिंह चौकड़िया, आदि ने संबोधित किया।

मारवाड़ राजपूत सभा का प्रतिभा सम्मान समारोह

मारवाड़ राजपूत सभा जोधपुर द्वारा 31 दिसम्बर को प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें नव चयनित आरएएस के साथ-साथ बोर्ड परीक्षाओं में 85 प्रतिशत अंक हासिल करने वाले छात्र-छात्राओं, खेल जगत की विशिष्ट प्रतिभाओं, सामाजिक कुरीतियों यथा टीका, दहेज नहीं लेने वाले, नशा मुक्ति के लिए कार्य करने वालों सहित 300 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने कहा कि समाज में काम करने वालों को अनुभवी वरिष्ठ लोगों से मार्गदर्शन लेना चाहिए। हमें अपने कार्यों से सफलता की कहानी बनानी चाहिए जो दूसरों को मार्गदर्शन दे सके। प्रशासनिक क्षेत्रों के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी प्रतिभाएं अपना हूनर दिखा रही हैं, उनसे भी प्रेरणा लेनी चाहिए। समारोह अध्यक्ष पूर्व महाराजा गंगासिंह ने कहा कि युवाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने का दायित्व हम सब का है। उन्होंने पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव द्वारा स्थापित राजपूत शिक्षा कोष की अवधारणा की सराहना की। जेडीए जोधपुर के अध्यक्ष महेन्द्रसिंह राठौड़ ने प्रतिभाओं द्वारा किए जा रहे प्रयासों का अनुकरणीय बताया। पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव ने राजपूत शिक्षा कोष की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कहा कि युवाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए सहायता हेतु 10 करोड़ के कोष के गठन का प्रयास कर रहे हैं जिसके ब्याज से सहायता प्रदान की जा सके। इसके लिए विगत कुछ माह में ही 50 लाख रुपए एकत्र हो चुके हैं एवं निरन्तर सहयोग जारी है। हर व्यक्ति से न्यूनतम अंशदान लेने का प्रयास किया जा रहा है। समारोह के दौरान ही राजस्थान बीज निगम के अध्यक्ष शंभुसिंह खेतासर ने 5 लाख रुपए का अंशदान दिया। हनवंत राजपूत बोर्डिंग के छात्र खेतूसिंह व हर्षवर्धन सिंह को स्व. कप्तान जतनसिंह गंठिया स्मृति स्कॉलरशिप के तहत 11-11 हजार रुपए की स्कॉलरशिप व रॉलिंग ट्राफी दी गई। नव चयनित आरएएस के तहत जयपालसिंह राठौड़, दिलीपसिंह राठौड़, जितेन्द्रसिंह राठौड़, जेठूसिंह करणोत, भवानीसिंह इंदा, सज्जनसिंह राठौड़, पुष्पेन्द्रसिंह राजावत, हरिगोपालसिंह राठौड़, जयपालसिंह शेखावत, हेमेन्द्रसिंह भाटी, सुमन कंवर कुंपावत, वीरेन्द्रसिंह राठौड़, पूनम कंवर राठौड़, हरेन्द्रसिंह जोधा, इन्द्रजीतसिंह चौहान, गजेन्द्रसिंह राठौड़, नेहा कंवर राठौड़ व कृष्ण बलदेवसिंह राठौड़ का सम्मान किया गया।

भक्ति नगर शाखा में पूज्य श्री का स्मरण

भावनगर प्रांत में पूज्य तनसिंह जी की जयंती के उपलक्ष में प्रति सप्ताह एक शाखा में कार्यक्रम रखने की योजनानुसार 7 जनवरी को भक्तिनगर मैदानी शाखा में कार्यक्रम रखा गया। पुष्पांजलि के पश्चात उपस्थित महिला, पुरुषों एवं शाखा के स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए संभाग प्रमुख धर्मेन्द्रसिंह आंबली ने पूज्य तनसिंह जी का जीवन वृतांत प्रस्तुत किया एवं संघ स्थापना को लेकर उनके दर्शन को स्पष्ट किया। स्वयंसेविका जसनाबा ने क्षत्राणी और संघ विषय पर अपनी बात कही। गुजरात शाखा विभाग के प्रमुख छन्नुभा पच्छेगाम ने कहा कि संघ क्रियात्मक शिक्षण है जिसे बातों से नहीं समझा जा सकता। जितना इस मार्ग पर चलते हैं उतना ही समझ में आता है। रात्रि शाखा में सभी के लिए सामूहिक भोज का आयोजन किया गया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com , Web site:- www.shrikys.org